IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, December 2023
Impact Factor: 7.301

नवजागरण और राष्ट्रीय साहित्य

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर –हिन्दी

पं. रामलखन शुक्ला राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर उ0प्र0

शोध सारांश– 19 वीं शताब्दी में भारत में नवजागरण का आरंभ हुआ, जिसे भारतीय पुनर्जागरण भी कहा जाता है। यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और बौद्धिक आंदोलन था, जिसने सदियों से चली आ रही रूढ़ियों को चुनौती दी। इस आंदोलन की नींव अंग्रेजी शिक्षा, प्रेस के प्रसार और पश्चिमी विचारों के संपर्क से पड़ी। राजा राममोहन राय को भारतीय नवजागरण का 'जनक' माना जाता है। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, बाल–विवाह का विरोध किया और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनके बाद ईश्वरचंद विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले और सर सैयद अहमद खान जैसे समाज सुधारकों ने धर्म, शिक्षा और समाज के क्षेत्र में क्रांति ला दी।

यहीं से राष्ट्रीय साहित्य की धारा फूटती है। राष्ट्रीय साहित्य वह साहित्य है जो देश की अस्मिता, एकता, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक गौरव को केंद्र में रखता है। 1857 की क्रांति के बाद साहित्यकारों ने कलम को हथियार बनाया। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' ने हर भारतीय के मन में स्वदेश प्रेम जगाया। उनकी पंक्ति 'जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं, वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' घर–घर में गूंजी।

इस प्रकार नवजागरण ने तर्क, विज्ञान और मानवता का रास्ता दिखाया, तो राष्ट्रीय साहित्य ने उस चेतना को जन–जन तक पहुँचाया। दोनों ने मिलकर 200 साल की गुलामी के खिलाफ मानसिक और भावनात्मक भूमि तैयार की। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि पर भारत का स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया और जीता गया। नवजागरण और राष्ट्रीय साहित्य आज भी हमें बताते हैं कि देश बनता है विचारों से, और विचार बनते हैं साहित्य से।

मूल शब्द– हुकूमत, अस्मिता, उत्प्रेरित, नाजायज, नजराना, नब्ज, पुनरूत्थान।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in